International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 221-222

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 221-222
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 17-11-2020
Accepted: 24-12-2020

रश्मि गुप्ता
शोध छात्रा, संस्कृत, जी.वि.वि.
ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

डा. मनीष खैमरिया
शोध निर्देशक, प्राध्यापक एवं संस्कृत विभागाध्यक्ष, शा.एम.एल.बी. कॉलेज, ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रश्मि गुप्ता
शोध छात्रा, संस्कृत, जी.वि.वि.
ग्वालियर, मध्य प्रदेश, भारत

कालिदास के काव्यों में प्रकृति चित्रण

रश्मि गुप्ता एवं डा. मनीष खैमरिया

प्रस्तावना

कालिदास के काव्यों में प्रकृति की नानारूपाणि छवियों के नितान्त मनोरम एवं प्रभावशाली चित्रण उपलब्ध होते हैं। वे प्रकृति के प्रवीण पुजारी थे। उनके सजीव एवं प्राकृतिक वर्णन हमारी कल्पना चक्षु के सम्मुख एक स्पष्ट चित्र उपस्थित कर देते हैं। ब्राह्य दृश्यों के रूपयोजनात्मक चित्रण से उनके प्रकष्ट प्रकृति प्रेम का परिचय मिलता है। उनके प्रकृति वर्णन में निरीक्षण की नवीनता, सहृदयता की सरसता तथा कल्पना की कमनीयता पाई जाती है उन्होंने प्रधानतया प्रकृति के केवल भव्य, मनोरम और सौन्दर्य समुज्जवल पक्ष का ही वर्णन किया है।

आर.ई. रॉबिन्सन – का कहना है कि ''उनकी आँखे पारदर्शी प्रिज्म के समान जीवन के सभी गहरे चमकीले रंगो को पहचान लेती थीं और उनका मस्तिष्क कलाकार की रंग मिटाने वाली पटरी के समान उन्हें ग्रहण कर रत्नोपम सौन्दर्य के चित्रणों में अनुदित कर देता था।[1]

कालिदास ने अपनी कृतियों में प्रकृति और प्रेम का मधुर संबंध स्थापित किया है उन्होंने प्रकृति को मुख्यतः एक प्रेमिका के रूप में देखा है। 'रघुवंश' में पवन के झकोरों से थिरकती लताओं के रूप में नर्तकियों का कैसा सुन्दर एवं सजीव चित्र उपस्थित किया गया है।

''श्रुतिसुखभ्रमरस्वनगीतयः कुसुमकोमलदन्तरूचो बभुः।
उपवनान्तलता पवनाहतैः किसलयैः सलयैरिव पाणिभिः।।''[2]

''उपवन में लताएँ नाच रही हैं। भ्रमरों की श्रृतिमधुर गंजार ही उनका मादक संगीत है। कोमल कुसुम कलियाँ उनके चमकते दाँत है। वायु के झकोरों से हिलते किसलय उनके सुकुमार पाणिपल्लव हैं जिनसे वे मानों बीच–बीच में ताल दे रही हैं''

कालिदास ने प्रकृति को मूक, चेतनाहीन अथवा निष्प्राण नहीं माना है मानव प्राणियों की भाँति उनमें भी सुख–दुख संवेदना का भाव देख पड़ता है। 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक में नायिका मालविका के न मिलने पर प्रकृति के द्वारा अग्निमित्रम् के दुख को बाँटते हुए उसे सांत्वना व संतोष देते हुए कहा है कि–

''उन्मत्तानां श्रवणसुभगैः कूजितैः कोकिलानां
सानुक्रोशं मनसिजरूजः सह्यतां पृच्छतेव।
अङ्गे चूतप्रसवसुरभिर्दक्षिणो मारूतो मे
सान्द्रस्पर्शः करतल इव व्यापृतो माधवेन।।''[3]

राजा वायु के स्पर्श मात्र के सुख का अनुभव करते हुए कहता है कि आम्रमंजरी के सुवासित यह मलयानिल मेरे अंगो को स्पर्श कर रहा है, मानों स्वयं बसन्त अपने कोमल और प्रेमस्निग्ध हस्त से मुझे स्पर्शसुख प्रदान करता हुआ कोयल की मधुर काकली द्वारा मुझसे सहानुभूति में कह रहा हो कि हे सखे, अपने मदन पान को सहन करो।

कालिदास ने ''कुमार सम्भव के छठे सर्ग में (श्लोक 58) में हिमालय का चल और अचल दो रूपो में उल्लेख किया है वे हिमालय को देवात्मा कहते हैं''[4] उनका मानना है कि चल के रूप में वह देवता है और अचल के रूप में पर्वत है उन्होंने अपने काव्यों में गंगा को बार–बार नदी और देवता दोनों रूपों में वर्णित किया है। कालिदास प्रकृति को पूर्ण सजीव तथा सचेतन मानते हैं। प्रकृति की प्राणशीलता उनके समीप आरोपित नहीं, अपितु एक स्वभाविक सत्य है जिसमें किसी दार्शनिक का प्रतिमान नहीं मिलता, प्रत्युत जो एक दृढ़ विश्वास तथा गहरी अनुभूति का प्रतिफलन है। इसीलिए पार्वती और शकुन्तला कालिदास की प्रकृति कुमारियाँ है।

कालिदास की कुमारियाँ लता पादतों को स्नेह से सींचती हैं। 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के प्रथम अङ्क में पौधों का सेचन करती हुई शकुन्तला तथा उसकी सहेलियों में जो विनोदपूर्ण संलाप हुआ है, वह इस प्रकार है–

''यथा–वनज्योत्स्ना अनुरूपेण पादपेन संगता अपि नामैवमहमप्यात्मनोऽनूरूपं वरं लभेयेति।''[5]

''देखो यह सोच रही है कि जैसे यह वनज्योत्स्ना अपने योग्य वृक्ष से लिपट गई है, वैसे ही मुझे भी मेरे योग्य वर मिल जाये।'' मात्र इतना ही नहीं शकुन्तला की विदाई से दुखी होकर वन्य पशु–पक्षियों व लताओं का वर्णन करते हुए कवि कालिदास कहते है कि–

उद्गलितदर्भकवला मृग्यः परित्यक्तनर्त्तना मयूराः।
अपसृतपाण्डुपत्रा मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः।।

''हरिणियाँ चबाई कुशा के कौर उगल रही हैं। मोरों ने नाचना छोड़ दिया है, और लताओं से पीले–पीले पत्ते इस प्रकार झड़ रहे हैं, मानो उनके आँसू गिर रहे हों। कालिदास की काव्य की यह कल्पना ही है जो शकुन्तला को पतिग्रह जाते समय अलंकृत होने के लिए वृक्षों द्वारा आभूषण प्रदान किए गये।

क्षौमंकेनचिदिन्दुपाण्डुतरूणा माङ्गल्यमाविष्कृतं
निष्ठयूतश्चरणोपभोगसुलभो लाक्षारसः केनचित्।
अन्येभ्यो वनदेवताकरतलैरापर्वभागोत्थतै–
र्दत्तान्याभरणानि तत्किसलयोद्भेदप्रतिद्वन्द्विभिः।।[7]

''किसी वृक्ष ने चन्द्रमा के समान पाण्डुरवर्ण माङ्गलिक रेशमी साड़ियाँ प्रकट की किसी ने पैरों में लगाने के निमित्त महावर दिया और किसी वृक्ष से वनदेवताओं ने कलाई तक पल्लवों के समान कोमल हाथ बाहर निकालकर हमें नाना प्रकार के आभूषण भी दिये है। 'विक्रमोर्वशीयम्' में भी कालिदास ने अपनी प्रतिभा व कौशल के द्वारा प्रकृति का वर्णन कर नाटक को प्रसिद्ध बना दिया उर्वशी के वियोग में पुरूरवा पागल की भॉति वन के वृक्षो व लताओं व वन्यजीवों से अपनी प्रेमिका के विषय में पूछता है जो कि देखते ही बनता है।

''मदकलयुवतिशशिकलागजयूथपयूथिका–शवलकेशी।
स्थिरयौवना स्थिता ते दूरालाके सुखालोका।।''[8]

''हे गजराज–मद के कारण अस्फुट शब्द बोलने वाली युवतियों में चाँदनी जैसी जुही–पुष्पों से चित्रित केशों वाली स्थायी यौवन से युक्त तथा देखने में सुन्दर मेरी प्रिया को क्या तुमने कभी दूर से भी देखा है।

कालिदास के अनुसार प्रकृति में सर्वत्र प्रेम की शीतल छाया प्रसार पा रही है। सारी चराचर प्रकृति सचेतन एवं भावनाशील है ''प्रकृति के विविध दृश्य मानव–हृदय को भिन्न–भिन्न प्रकार की उत्कण्ठाओं एवं प्रेरणाओं से आन्दोलित करते हैं। अन्तः और बाह्य–प्रकृति का यह घनिष्ठ संबंध मेघदूत में सर्वत्र देखने को मिलता है।''[9] उन्होनें मेघदूत में प्रकृति को दो भागों पूर्वमेघ को बाह्य और उत्तर मेघ के अन्तः में विभाजित कर प्रकृति के सौन्दर्य को निखारा है। ''पूर्वमेघ में विरही यक्ष सृष्टि–सौन्दर्य का दर्शन कर अपने दुःखी हृदय को आश्वासन देता है, उत्तरमेघ में वह प्रकृति के संयोग में अपनी प्रियतमा के अतीत एवं भावी मिलन–सुख का स्वप्न देखता है।'' अलका के भवन में बैठी यक्षपत्नी के विषय से अवगत कराते हुए यक्ष मेघ से कहता है –

''तन्वी श्यामा शिखरिदशना पक्वबिम्बाधरोष्ठी
मध्ये क्षामा चकितहरिणीप्रेक्षणा निम्ननाभिः।
श्रोणीभारादलसगमना स्तोकनम्रा स्तनाभ्यां।
या तत्र स्याद्युवतिविषये सृष्टिराद्येव धातुः।।''[10]

''दुबली–पतली, युवती, नुकीले दाँतो वाली, पके हुए बिंबफल के समान निचले ओठ वाली, कमर से पतली, डरी हुई हरिणी के समान नेत्रों वाली गहरी नाभिवाली नितम्ब के भार के कारण अलसायी चाकवाली, ऊँचे, उन्नत पयोधरों से थोड़ी झुकी हुई स्त्रियों में ब्रह्मा की सबसे पहली रचना की जो स्त्री वहाँ हो।'' वही मेरी पत्नी है। इस प्रकार कालिदास ने मेघ को दूत के रूप में प्रस्तुत कर यक्ष की पत्नी का वर्णन प्रकृति के माध्यम से प्रस्तुत किया है।

निष्कर्ष –

कालिदास ने अपने काव्यों में प्रकृति का बड़ा ही मनोहर वर्णन किया है कुछ लोग प्रकृति को कालिदास की प्रेमिका भी मानते हैं उन्होंने कहा है कि मनुष्य और प्रकृति के बीच जो चौढ़ी खाई मानवता की सुदीर्घ विकास–यात्रा में उत्पन्न होती है, उसके पाटे जाने की आवश्यकता तथा स्पृहणीयता की ओर हमारी मनोदृष्टि आकर्षित की है। कवि प्रकृति में रम गये हैं और जिस प्रकार प्रकृति की रमणीयताएँ चिर–पुरातन होने पर भी चिर नवीन रहती है, उसी प्रकार कवि की कूँची प्रकृति–चित्रों को सजाने में कौशल का परिचय देती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. महाकवि कालिदास– डॉ. रमाशंकर तिवारी – चौ. विधाभवन – सं 1999
2. रघुवंश – श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी– चौ. सुरभारती वाराणसी, सं. 2020
3. मालविकाग्निमित्रम्– डॉ. रमाशंकर पाण्डेय – चौ. सुरभारती प्रकाशन वाराणसी स. 2014
4. अभिज्ञानशाकुन्तलम्–श्रीकृष्णमणि त्रिपाठी–चौ.सुरभारती प्रकाशन वाराणसी सं. 2018
5. विक्रमोर्वशीयम्–पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय–चौ. सुरभारती प्रकाशन वाराणसी सं. 2012
6. संस्कृत साहित्य की रूपरेखा–चन्द्रशेखर पाण्डेय– साहित्य निकेतन कानपुर सं. 1948
7. मेघदूत–डॉ. रमाशंकर त्रिपाठी– विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी सं. 2010